विकास का अमृत-घट

दरअसल मीडिया जिस स्वरुप में है, उसका विकास भारत में अधिकतम दो-ढाई सौ और विश्व में अधिकतम पांच सौ वर्षों के दौरान हुआ है। उसका फैलाव, पहुंच और प्रभाव तो क्रमश: एक और दो शताब्दी तक सीमित है। जिस तरह से संस्कृति तथा नीति की संस्थाएँ, परिवार तथा समाज के साथ-साथ व्यक्ति को जिस तरह से प्रभावित करती रही हैं, उसी तरह से इस तरह का प्रभाव पिछले वर्षों में मीडिया के माध्यम से हुआ है। अब एक हद तक मीडिया ही माध्यम बन चुका है उस सबका। मीडिया की पहुँच और प्रभाव व्यक्ति और समाज के निजी जीवन तक अपनी जड़ें जमा चुका है। अब वह सिर्फ विचार या जानकारी का ही माध्यम नहीं रहा। मनोरंजन के साथ ही जीवन मूल्य, जीवन व्यवहार तथा जीवन शैली को उसने बदला है। यह बदलाव न तो मूल्यानुगत है और न ही वह पारंपरिक संस्कृति की संगति में है। इसलिए भी प्रभाव के इस निर्णय का छोर या केंद्र पकड़ में नहीं आ पाता है। पर, अब जब उसका प्रभाव व्यक्ति, उसके परिवेश, जीवन शैली, विचार-व्यवहार, व्यवस्था और विकास के स्रोतों तक है, तो उसकी भूमिका का विवेचन करना पड़ेगा । मूल्यानुगत का संदर्भ इस अर्थ में कोरा उपदेश या बहस नहीं है। वह मीडिया के इस नये स्वरुप को संस्कृति तथा नीति के संदर्भ में, विकासपरक व्यवस्था के सहयोग के लिए प्रतिष्ठा तथा मान्यता के लिए है। यह सागर मंथन की प्रक्रिया का ही अंग है जिसके भागीदार मीडिया के ही लोग बने रहे हैं।

इस संबंध में यह याद करना और बताना भी अच्छा लगता है कि इन बीते बरसों में सभी जगह मूल्यों को लेकर ही मीडिया विमर्श होता रहा है। यानि अब सामान्यत: कोई भी विमर्श मूल्य संस्पर्श के बिना नहीं होता। राजस्थान विश्वविद्यालय के मीडिया अध्ययन केन्द्र तथा लोक संवाद संस्थान ने मूल्यानुगत मीडिया के साथ मिलकर मीडिया अध्येताओं की एक राष्ट्रीय संगोष्ठी सकारात्मक विकास और मीडिया के मूल्यों का विवेचन करते हुए की। इसके पूर्व हिसार में गुरु जम्भेश्वर विश्वविद्यालय के जनसंचार विभाग ने भी ऐसी ही संगोष्ठी आयोजित की। यही नहीं, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के मीडिया अध्ययन केन्द्र ने लगातार दो वर्षों तक अध्यात्म, सामाजिक बदलाव और मीडिया विषय को अपने राष्ट्रीय विमर्श में रखा। इसके अतिरिक्त अन्य कई स्थानों पर भी इसी तरह से संगोष्ठियां आयोजित की जाती रही हैं। ब्रह्माकुमारीज का मीडिया प्रभाग तो पिछले 25 बरसों से मूल्यानुगत पत्रकारिता के लिए विमर्श

का आयोजन करता रहा है। उसका केन्द्रीय विषय भी पत्रकारिता में मूल्यों की वापसी तथा अध्यात्म को उसके लिए आधार मानने के लिए रहा है। सभी जगह लोगों ने उत्साह से भाग तो लिया ही साथ ही यह स्वीकार किया कि मीडिया के लिए मूल्यों की वापसी की जरुरत आज पहले से अधिक है। उसका केन्द्र सकारात्मक विकास और मानवीय मूल्यों पर ही होना चाहिये।

अब यह तो लगता है कि यह विषय स्वीकार कर लिया गया है। पर इसके उपाय और रास्ते के वारे में अभी भी कुहासा है। श्री एन. के. सिंह का यह कथन इस वारे में याद आता है। उन्होंने एक मीडिया संगोष्ठी में कहा था-गाल फुलाना और हंसना एक साथ नहीं हो सकता। यानि हम बहुत अधिक वेतन, सुविधाऐं, सुरक्षा आदि सब चाहें और फिर मीडिया की आर्थिकी को समझे बिना उसको जोखिम में डालना भी चाहें, तो यह दोनों एक साथ नहीं हो सकते। मीडिया का सामाजिक बदलाव के लिए उपयोग करने के लिए हमें यानि हम पत्रकारों को भी अपना योगदान देना होगा। यह समझना, स्वीकार करना भी इस तरह के परिणाम के लिए जरुरी है।

बहरहाल, अब यह बहस मीडिया और समाज के रिश्ते को लेकर चल पड़ी है और बहुत से लोग इसके साथ लगातार आते जा रहे हैं। हां, यह सच है कि मीडिया के मुनाफे और उसके अपने हितों में लाभ के लिए उपयोग करने वाले लोग अब भी तैयार नहीं हैं। जो सहमत होकर आ रहे हैं वे ज्यादातर पत्रकार या समाज में बदलाव के लिए काम कर रहे लोग ही हैं। उन्हे आप देव कहें या अदेव। पर मूल्य, स्थिति और बदलाव का मंथन अब वे कर रहे हैं। अमृत पाना ही इस मंथन से, उनका लक्ष है। मंथन के लिए प्रारंभ हुआ शुभ हो हमारा यह पथ। मंगल हों हमारे वचन और श्रेष्ठ हों हमारे कर्म। खुले रहें हमारी पावन स्मृतियों के सभी द्वार–'आनो भद्रा यंतु क्रतवो विश्वत:। कामना करें कि संभाले परमात्मा इसके सूत्र। इसी कामना और दृष्टि से मूल्यानुगत मीडिया का यह संकल्प दोहराते हुए हर्ष है। आयें, मंथन के सूत्र संभाले ताकि अमृत का घट प्रकट हो सके।

ooo